दिनांक 14-09-1975 की अव्यक्त वाणी पर आधारित मुरली कविता

अकाल तख्त-नशीन और महाकाल-मूर्त बन समेटने की शक्ति का प्रयोग करो

एक समय में पांचों तत्व करेंगे चारों ओर से वार
शक्तिशाली स्थिति से करना हर परिस्थिति पार

बचाव के सब साधन समस्याओं में बदल जाएंगे
बताओ इन हालातों का सामना कौन कर पाएंगे

खुद को सदाकाल के लिए तख्तनशीन बनाओ
इसी विधि से खुद को मास्टर महाकाल बनाओ

जरा सा भी देहभान हार खिला देगा अचानक
पांच विकार धारण करेंगे रूप इतना भयानक

हार जीत का निर्णय एक सेकण्ड में हो जाएगा
ऐसे समय पर समेटने का बल ही काम आएगा

घर जाने का संकल्प ही सदा विस्तार में लाओ
देह के किसी बंधन में तुम खुद को ना फंसाओ

ज्ञान योग को बनाओ तुम घर जाने का आधार
आत्मा बनकर उड़ जाओ आकाश तत्व के पार

विनाश को लेकर ना करना संशय से भरे विचार
सामना करने की खातिर कर लो खुद को तैयार

महीन रूप से बन जाओ स्वयं ही स्वयं के चेकर
विजयी बनो तुम पाँच विकारों को विदाई देकर